

953

वज्रसां स्वासा घृष्टं किञ्चिद् ॥ धनं नृपि यय ॥ ॥ उँ नमो वक्षाय
गुनवर्नमा धर्माय गा न नमो सांघाय मदा रुम ॥ उँ आ ॥ उँ श्री मग वज्र
स जु न व न व क म सा य न मा सं म्य क रू ना व रा स न क ना य न मा ॥ उँ न
म क रु न म क रु न मा मि न मा न म ॥ रु क्ता र्दं त्वां न म स्या मि गु न ना र्थ
यु मि ह्व यं ॥ य स्य पु न्ना द कि न त्वां स रु वि गा त्म ग र्व न त्वा पु रा वा प वि क
प प रु ना त्म का ना प न्थ न्ना वि न द ग स वि ना स म र्वै क र्मे न म र्ति वि

विर्यं गुनराखनाय विद्यापि सगगं नमः सर्ववृद्धं नमस्या मिधर्मैश्च
 दिनरात्रिगंसंघे श्रीलसंपन्नं वत्तययं नमास्तु नत्तययं मंगन
 लं सर्वपुतिदिना मवज्ज नमादिङ्गल्यं वृद्धं वाधादधमनजावा
 धीगनलं यामिवृद्धधम्मगत्ता रुमवाधा विरुक्ता म्यवस्वपना येष
 सिद्धयः ॥ उत्पादयामिव नवाधि विरुक्ता निर्मग्याम्य सर्वसत्त्वान्
 शान्तिनिष्ठवनवाधिवानिका वृद्धा रुवयं ऊगनादिगायदनां सर्व

पाषाणां पृथ्व्यानां वानमादिनां कृता यस्तान्वनिष्यामि ज्ञायास्तर्गमा
ग्नस्य वाचं ॥ **वगश्रुतं ज्वमधुनसदाया** ॥ अष्टमृगं मयं मन्त्रं वरुणीय
युसाहितं सफनत्तसमाकीर्णं ददनरुतदायनी गुनयो वदधम्म
या संघलयश्च तथेव वज्रात्मा निष्पीतया मितावनसं पृथूनत्तमधु
त्वं ॥ **थनपायदमनायाय** ॥ जनादिगतिसंसाधकं न्यर्गववापन
धयत्तयापगुनापायं कृगं काविरुमं ववा ॥ यवान्मादिगं किंचिदा

ये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं क्रातुय २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं विनमनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं
क्रां २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स्वर्वायीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं हन २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं लं
कम्बनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं हं २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं ह्रमकाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं
रुद्र २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं उतावनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं दह २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं
महादेवनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं यव २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं वायवंगीये हूं रुद्र
स्वाहा ॥ ईं रुद्र २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं वस नूधीना नमालावत विश्वे हूं रुद्र स्वा
हा ॥ ईं सनातनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं गृह २ सफपागालयगह ईं गानसफवा

गर्जय २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं म्भामादवी हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं आकट २ हूं रुद्र स्वा
हा ॥ ईं सदाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं की २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं सयकभीये हूं रुद्र स्वा
हा ॥ ईं ह्र २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स्वगानाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं क्रा २ हूं रुद्र स्वाहा
॥ ईं वक्रवगाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं सां २ सां २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स्वपुनासाये हूं
रुद्र स्वाहा ॥ ईं सां २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं आतिनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं हूं २ हूं रु
द्र स्वाहा ॥ ईं वक्रवत्सनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं किलि २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स
नावीनाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं सिनि २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं महावलाये हूं रुद्र स्वा

सा ॥ ई विसि १ हूं रुट् स्वासा ॥ ई चक्रवर्त्तनीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई द्विवि २ हूं रुट्
 स्वासा ॥ ई महावीर्ये हूं रुट् स्वासा ॥ ई काका स्याये हूं रुट् स्वासा ॥ ई उन्का
 स्याये हूं रुट् स्वासा ॥ ई ग्वा ना स्याये हूं रुट् स्वासा ॥ ई गूकना स्याये हूं रुट् स्वा
 ई यमदा दीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई यम इमीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई यम उदुनीये हूं
 रुट् स्वासा ॥ ई यम पथनीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई चक्रुगगकनये वक्तासा
 कूलकलकलीषर्षा मृदुलामलकी वधुधालान्धकानकितिकिलालवहूं
 रुट् स्वासा ॥ ॥ ई नमः सर्वगथागगसतलिन विलासनमिगं श्रीचक्रम

॥ ॥ ॥

म्बनरुष्टानकायडं १ हूं वंसां कसमा ऊरी नाथदा वज्रपथ्यं पति कृत्वा सा ॥
 ॥ नमः ॥ ॥ यनायदान पूजा ॥ वादगला ग्वा सुनि ॥ ॥ ई वज्रसत्त्वसं
 ग्रहको ॥ ई वज्रवत्तमनरुत्तं ॥ ई वज्रधर्मकलायवैतं ॥ ई वज्रकर्मकला
 रुव ॥ ई वज्रवीर्यहूं ॥ ई वज्रवंशगो ॥ ई वज्रमृदंगको ॥ ई वज्रमनरु
 ज्ज ॥ ई वज्रसास्यहूं ॥ ई वज्रमालागो ॥ ई वज्रगीतको ॥ वई उन्नुय
 अ ॥ २ ॥ ई वज्रपथ्यहूं ॥ ई वज्रधूपगो ॥ ई वज्रासाकको ॥ ई वज्र
 गन्धज्ज ॥ ई वज्रनसंगो ॥ ई वज्रवनसंगो ॥ ई वज्रधर्मज्ज ॥ जमस्त